विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 26 : अंक 30 : नई दिल्ली : 16-22 अक्टूबर 2020

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण आदि चारित्रात्माएं हैदराबाद में स्थित 'महाश्रमण वाटिका' में सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। गत १३ अक्टूबर को हैदराबाद में भारी वर्षा हुई। अतिवृष्टि के कारण हैदराबाद का जनजीवन अस्त-व्यस्त बन गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार करीब १५ लोग कालकवलित भी हो गए। कई इलाकों में कई फुट ऊंचाई तक पानी एकत्रित हो गया। बताया गया कि इतनी वर्षा कई दशकों में पहली बार हुई है। भारी वर्षा के बावजूद पूज्यप्रवर का चतुर्मास स्थल परिसर 'महाश्रमण वाटिका' काफी सुरक्षित है।

स्मृतियां लॉकडाउन की

परम पूज्य आचार्यप्रवर का ४७वां दीक्षा दिवस

६ मई। परमाराध्य आचार्यप्रवर का ४७वां दीक्षा दिवस। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने इस बार अपने जीवन के इस तीसरे महत्त्वपूर्ण दिन को भी विश्व शांति और विशेष रूप से वर्तमान परिस्थिति में संकटग्रस्त बने हुए लोगों की चित्तसमाधि की मंगलकामना हेतु समर्पित कर दिया। साधु-साध्वियों व श्रावक-श्राविकाओं के लिए आज भी हृदय में उमड़ते श्रद्धाभावों की सार्वजनिक प्रस्तुति निषिद्ध थी। इसलिए मुनिवृन्द व्यक्तिगत रूप में पूज्य सन्निधि में उपस्थित होकर अपनी मंगलभावनाएं श्रीचरणों में समर्पित कर रहे थे। सूर्योदय के उपरान्त साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुंचीं। साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर को वर्धापित करते हुए कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर का आज दीक्षा दिवस है। आचार्यप्रवर की साधना का तेज और ओज बढता रहे। उस साधना का ओज हमें भी प्राप्त होता रहे।' पूज्यप्रवर ने साध्वीप्रमुखाजी द्वारा सम्पूर्ण धर्मसंघ की ओर से प्रस्तुत मंगलभावों को स्वीकार किया।

आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान भी पूज्यप्रवर के प्रवचन के मध्य जप का उपक्रम रहा। आचार्यप्रवर ने इस अवसर पर कहा--'आज वैशाख शुक्ला चतुर्दशी है। पूर्व निर्धारित व्यवस्था के अनुसार हमें आज 'चइत्ता भारहं वासं .....' श्लोक का यथासंभव खड़े-खड़े सात बार पाठ करना है। वर्तमान में जो संसार में कोरोना वायरस की स्थिति फैली हुई है, उस संदर्भ में कुछ अशांति, असुविधा हो रही होगी, कई लोग संकटग्रस्त भी बने हुए हैं। हम विश्व शांति और विशेषतया उन संकटग्रस्त लोगों के लिए आध्यात्मिक मंगलकामना के रूप में 'चइत्ता भारहं वासं ..... ' श्लोक का सात बार पाठ करें। (पूज्यप्रवर ने खड़े-खड़े 'चइत्ता भारहं वासं .....' श्लोक का सात बार पाठ किया।) विश्व शांति और संकटग्रस्त लोगों के लिए हमारी आध्यात्मिक मंगलकामना।'

दो विभूतियों के बीच पत्रों का आदान-प्रदान

९ मई। आज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवतजी का एक पत्र पूज्यप्रवर के निवेदनार्थ प्राप्त हुआ। पत्र की भाषा इस प्रकार है-

श्रद्धेय आचार्य महाश्रमणजी,
सादर चरणस्पर्श

आप सानन्द स्वस्थ एवं सकुशल होंगे ही। कोरोना महामारी के प्रकोप में समाजहित में सक्रिय आप जैसे महानुभावों का स्वस्थ एवं सुदृढ़ रहना और अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इस दृष्टि से भी सभी नियमों का पालन करते हुए आप तथा आपके आप्तमित्र स्वस्थ एवं सुरक्षित रहें, ऐसी शुभकामना हम सभी संघ के स्वयंसेवक कर रहे हैं।

कोरोना महामारी के संकट को समाज सफलतापूर्वक पार कर सके, इस दृष्टि से चल रहे प्रयासों में सभी स्वयंसेवक अपना योगदान दे रहे हैं। स्वयंसेवकों द्वारा अब तक किए गए प्रयासों की जानकारी का विवरण आपकी जानकारी के लिए संलग्नित है।

परन्तु इस विषाणुजन्य बीमारी के प्रत्यक्ष परिणामों का निवारण करने के साथ उतना ही महत्त्वपूर्ण कार्य उससे उत्पन्न आर्थिक व सामाजिक कठिनाइयों का सामना करने तथा इस अनुभव से कुछ पाठ ग्रहण कर समाज व राष्ट्र के जीवन निर्वाह व विकास के पथ का नवनिर्धारण करना ही होगा। इस अनिवार्य कार्य को सम्पन्न करने के लिए आवश्यक सकारात्मकता, एकात्मता, अनुशासन प्रयासों का सातत्य व विजिगीषा समाज में बनी रहे, यह दायित्व शासन-प्रशासन के साथ-साथ आप जैसे समाज की चिंता करने वाले महानुभावों के कंधे पर ही रहेगा।

आप इस बात को समझते हुए सजग और सक्रिय हैं ही। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस कार्य में आपकी सहायता के लिए सदैव तत्पर रहेगा।

एक बार आप सभी को दीर्घायुरारोग्य की शुभकामनाएं।

आपका

मोहन भागवत

पूज्यप्रवर ने ११ मई को इस पत्र का प्रत्युत्तर प्रदान किया, वह इस प्रकार है-

अर्हम् ११ मई २०२०

श्री मोहनजी भागवत
सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
आध्यात्मिक मंगलकामना !

आपका ६.५.२०२० का पत्र प्राप्त हुआ। वर्तमान में कोरोना वायरस की स्थिति के कारण न केवल भारत में अपितु विश्व में विचारणीय स्थिति बनी हुई है। कुछ दिनों पूर्व आपका भाषण भी सुनने का अवसर मिला था। आपके भाषण में संकीर्ण वृत्ति से ऊपर रहने की बात सुनने को मिली। आप जैसे मनीषी और जिम्मेदार व्यक्तियों के उद्‌बोधन भी समाज को मैत्री और संयम की प्रेरणा देकर स्वस्थ समाज की संरचना में सहायक बन सकते हैं।

हम लोग अभी महाराष्ट्र में ही हैं। सोलापुर शहर के परिपार्श्व में बीएमआईटी, विद्या संस्थान में २१ मार्च २०२० से प्रवास कर रहे हैं। कुछ दिनों पहले आपका फोन मैसेज भी आया था। हालांकि मैं आपसे फोन से प्रत्यक्ष बात नहीं कर सका। हम लोग अपनी साधना में संलग्न हैं। हम अपने धर्मसंघ को भी कोरोना वायरस के संदर्भ में जागरूकता का संदेश देते रहते हैं और अभय और समताभाव की प्रेरणा भी देते रहते हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (सेवा विभाग) के २ मई तक का विवरण भी हमें प्राप्त हो गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ खूब आध्यात्मिक विकास करता रहे। आध्यात्मिक मंगलकामना।

बीएमआईटी, बेलाटी, **आचार्य महाश्रमण**
सोलापुर, महाराष्ट्र

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत का पत्र और उसका प्रत्युत्तर

११ मई। आज राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत द्वारा पूज्यप्रवर के निवेदनार्थ एक पत्र प्रेषित किया गया, जो इस प्रकार है-

श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी,

आशा है आप स्वस्थ होंगे। मैंने आपकी कुशलक्षेम जानने के लिए फोन पर सम्पर्क करने का प्रयास किया था। आपके मौन व्रत के कारण यह संभव नहीं हो सका।

मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि तप और साधना के साथ आप अपने स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखें। आपका जीवन हमारे लिए अमूल्य है। हम आपके सदैव स्वस्थ एवं सुदीर्घ जीवन की प्रार्थना करते हैं।

मंगलकामनाओं सहित,

११.०५.२०२० शुभाकांक्षी
अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री राजस्थान

पूज्यप्रवर के इस पत्र के प्रत्युत्तर में १७ मई २०२० को एक संदेश प्रदान किया गया, जो इस प्रकार है-

अर्हम् १७ मई २०२०

श्री अशोकजी गहलोत,
मुख्यमंत्री, राजस्थान।

आध्यात्मिक मंगलकामना।

हम लोग अभी बेलाटी, सोलापुर, महाराष्ट्र में स्थित हैं। वर्तमान में कोरोना वायरस की स्थिति में हम पदयात्रा को विराम देकर एक जगह रह रहे हैं।

आपका ११ मई २०२० का पत्र प्राप्त हुआ। राजस्थान की सरकार और सभी प्रदेशवासियों में चित्तसमाधि और शान्ति रहे। कोरोना वायरस के संदर्भ में अभय और समताभाव बना रहे। मंगलकामना।

बीएमआईटी, बेलाटी, महाराष्ट्र **आचार्य महाश्रमण**

आगामी यात्रा व चतुर्मास पर चिन्तन

१२ मई। आज पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में गुरुकुलवास स्थित बहुश्रुत परिषद के चारों सदस्यों व कुछ संतों की संगोष्ठी हुई, जिसमें पूज्यप्रवर की आगामी यात्रा/चतुर्मास के विषय में चिन्तन चला। पूज्यप्रवर ने निष्कर्ष रूप में कोई निर्णय प्रदान नहीं किया।

ज्ञातव्य है कि वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए साधु-साध्वियों व समाज के वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं के तरह-तरह के निवेदन पूज्यचरणों में पहुंच रहे हैं। प्रायः सभी निवेदन पदयात्रा न करने के पक्ष में हैं। कई लोग किसी वाहन, रेल आदि के द्वारा लाडनूं जैसे स्थान में पधारने का अनुरोध कर रहे हैं तो कुछ लोग सोलापुर में सुदीर्घ प्रवास का निवेदन कर रहे हैं। पदयात्रा के द्वारा हैदराबाद पधारने के पक्ष में पत्र के माध्यम से तो निवेदन करने वाला संभवतः कोई नहीं है।

यात्रा व चातुर्मासिक प्रवेश का दूरदर्शितापूर्ण साहसिक निर्णय

१३ मई। आज पुनः पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में बहुश्रुत परिषद के चारों सदस्यों और कुछ संतों की गोष्ठी आयोजित हुई। गोष्ठी में काफी समय तक विचार-विमर्श के पश्चात् आचार्यप्रवर ने निष्कर्ष रूप में जो निर्णय प्रदान किया वह इस प्रकार है-

अर्हम् १३ मई २०२०

यथासंभव १ जून २०२० को बी.एम.आई.टी. बेलाटी से प्रस्थान कर यथासंभव २९ जून २०२० को हैदराबाद में चातुर्मासिक प्रवेश करने का भाव है।

बी.एम.आई.टी. (सोलापुर के पास, महाराष्ट्र) **आचार्य महाश्रमण**

आचार्यप्रवर ने इस यात्रा की संक्षिप्त रूपरेखा प्रदान करते हुए साधु-साध्वियों के पृथक्-पृथक् ग्रुप्स बनाकर यात्रा करने का संकेत दिया। पूज्यप्रवर ने अपने इस निर्णय के उपरान्त पट्ट से नीचे खड़े होकर साध्वीप्रमुखाजी को मंगलपाठ उच्चरित करने के लिए फरमाया। साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर के निर्देश का अनुपालन करते हुए मंगलपाठ का उच्चारण किया और सम्पूर्ण धर्मसंघ की ओर से श्रीचरणों में पूज्यप्रवर की यात्रा और हैदराबाद चतुर्मास के प्रति मंगलकामना अर्पित की।

३१ मई तक लॉकडाउन घोषित था और उसके बाद की स्थिति भी अनिर्णीत अवस्था में थी। इस स्थिति में एक जून से इतने बड़े काफिले की पदयात्रा का प्रारंभ करने की घोषणा कर देना सबको आश्चर्यचकित कर रहा था। कई लोग इसकी सफलता को लेकर भी आशंकित थे, किन्तु दूरदृष्टा आचार्यप्रवर ने यह घोषणा क्यों की अथवा इसे किस रूप में सफल बनाएंगे, यह तो भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है।

श्रीमद् राजचन्द्र मिशन के प्रमुख श्री राकेशभाई द्वारा पूज्यप्रवर की वर्धापना

आज दिनांक के अनुसार पूज्यप्रवर का जन्म दिवस है। इस संदर्भ में श्रीमद् राजचन्द्र मिशन के प्रमुख श्री राकेशभाई ने पत्र के माध्यम से पूज्यप्रवर के अभिनन्दन में अपनी भावनाएं पत्र के माध्यम से संप्रेषित कीं। उनके पत्र के अंश इस प्रकार हैं-

शांतिसंवाहक पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज,

जीवन ही जिनका गुणपुष्पों का उपवन है, प्रेम, सौम्यता तथा शांतता से प्रवहमान् जीवनशैली के सिंचन से जहाँ नवपल्लवित होता है अहिंसा और अनुप्रेक्षा का कल्याणकारी संदेश, ऐसे आपके दैहिक अवतरण के मंगलमय दिन पर आपको सादर अभिवन्दना।

क्षमादि गुणों के संगीत द्वारा आप मुमुक्षुओं के जीवन में आत्मविकास के सुर प्रकट कर रहे हो, ज्ञानप्रकाश से मुक्तिमार्ग का दर्शन कराते हो, सबल नेतृत्व से पाषित करके साधना, सेवा एवं संस्कार के समन्वय से समाज विकास के लिए सतत प्रेम परिश्रम कर रहे हो और मात्र तेरापंथी समुदाय को ही नहीं, सर्व जिज्ञासु साधकों को विश्ववत्सल भगवान महावीर के संदेश से सुपरिचित करा रहे हो।

आपका सुदीर्घ जीवन और सानुकूल स्वास्थ्य धर्मभावना की प्रभावना करने में सहायक बने और उसके द्वारा अधिक से अधिक जीवों का कल्याण हो ऐसी आज के मंगल दिन पर अंतर की शुभेच्छाएँ।

१३.०५.२०२० धर्मस्नेहादर सहित,

(पूज्य गुरुदेवश्री राकेशभाई)

पूज्यप्रवर ने इसके प्रत्युत्तर में १४ मई को एक संक्षिप्त पत्र प्रदान किया, जो इस प्रकार है-

अर्हम् १४ मई २०२०

श्री राकेश भाई!

आध्यात्मिक मंगलकामना!

श्री राकेश भाई का हमारे जन्म दिवस के संदर्भ में संदेश प्राप्त हुआ। श्री राकेश भाई खूब अध्यात्म का उद्योत फैलाते रहें। मंगलकामना।

बीएमआईटी, बेलाटी, महाराष्ट्र **आचार्य महाश्रमण**

१५ मई। आज बी.एम.आई.टी. के ऑनर श्री दिलीप माने पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हुए। उन्होंने पूज्यप्रवर से इसी संस्थान में और अधिक प्रवास करने की प्रार्थना की।

●●●

क्रमशः ...

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण हैदराबाद में

६ सितम्बर। आज रविवार के संदर्भ में परम पूज्य आचार्यप्रवर के आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में 'सहज सतत प्रसन्नता' के सूत्रों की चर्चा की।

परमाराध्य आचार्यप्रवर का रविवार के संदर्भ में 'जीने की कला' विषय पर मंगल प्रवचन हुआ। बेंगलुरु के श्री शिवलालजी बोहरा द्वारा प्रस्तुत तथा डॉ. मनोहर भारती द्वारा लिखित एवं सम्पादित पुस्तक 'कर्नाटक में तेरापंथ : तब और अब' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की गई, इस पुस्तक में गुरुदेव तुलसी और आचार्यश्री महाश्रमणजी की कर्नाटक यात्रा के संस्मरण, चित्र आदि प्रस्तुत किए गए हैं।

पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'यह पुस्तक आई है। 'तब' अतीत होता है और 'अब' वर्तमान होता है। पुस्तक में 'तब' और 'अब' दोनों के चित्र दिखाई दे रहे हैं। तब और अब में करीब पचास वर्षों का फासला है। साध्वीप्रमुखाजी तब भी थे और अब भी हैं। दोनों समय का उदाहरण एक साथ देखना हो तो साध्वीप्रमुखाजी हैं। साध्वीप्रमुखाजी तब, अब और आगे (सन् २०२१, २०२२ आदि में) तीनों समय में साध्वीप्रमुखाजी खूब सेवा करते रहें। मंगलकामना।' पुस्तक के संदर्भ में श्री संजय धारीवाल ने अपनी प्रस्तुति दी।

रविवार के कारण आज दर्शनार्थियों का आवागमन कुछ अधिक रहा। आज 'महाश्रमण वाटिका' में स्थित मुनि प्रशांतकुमारजी के सहवर्ती मुनि कुमुदकुमारजी के 'कोरोना पॉजिटिव' होने की पुष्टि हुई। वे पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल के समीपस्थ कोटेज में प्रवास कर रहे थे। स्थिति को देखते हुए उन्हें भिन्न सामाचारी में सिकन्दराबाद, हैदराबाद की डी.वी. कॉलोनी में स्थित तेरापंथ भवन में ले जाया गया। पूज्यप्रवर ने उन्हें जाने से पूर्व दूर से मंगलपाठ सुनाया एवं निर्भीक रहने की प्रेरणा प्रदान की। आज रात्रि में अर्हत् वन्दना के उपरान्त पूज्यप्रवर की मंगलसन्निधि में मुनिवृन्द की संगोष्ठी का क्रम रहा। इस दौरान आचार्यप्रवर ने अनेक दिशा निर्देश प्रदान किए।

बालमुनि कुणालकुमारजी ने सिंघाड़े के साथ नौ की तपस्या की

८ सितम्बर। आज प्रातः करीब १०.१५ बजे पूज्यप्रवर की मंगलसन्निधि में साध्वीवृन्द की गोष्ठी आयोजित हुई। गोष्ठी में गुरुकुलवासस्थ संभवतः सभी साध्वियां सोश्यल डिस्टेंसिंग के साथ उपस्थित थीं। आचार्यप्रवर ने साध्वियों को भी 'विसम्बन्ध-३' के अन्तर्गत प्रदत्त 'आरोग्य केन्द्र' आदि की व्यवस्थाओं की स्मारणा करवाते हुए प्रशिक्षण प्रदान किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल प्रवचन के पश्चात् मुनि चैतन्यकुमारजी ने अपनी तपस्या के दसवें दिन ग्यारह की तपस्या तथा मुनि जिनेशकुमारजी और उनके सहवर्ती मुनि परमानन्दजी और बालमुनि कुणालकुमारजी ने अपनी तपस्या के नौवें दिन का प्रत्याख्यान किया। ज्ञातव्य है कि मुनि कुणालकुमारजी वर्तमान में जीवन के तेरहवें वर्ष में हैं। पूज्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'आज कई तपस्वी संत उपस्थित हैं। एक सम्पूर्ण सिंघाड़ा तपस्वी बन गया है। इसके साथ मुनि चैतन्यजी के भी आज दस की तपस्या है। मुनि जिनेशजी के सिंघाड़े को इस बार गुरुकुलवास में रहने का अवसर मिल गया। सिंघाड़े में तीन संत हैं, एक बाल, एक युवा और एक प्रौढ़ है। तीनों अवस्थाओं के संत तपस्या कर रहे हैं। मुनि चैतन्यजी प्रौढ़ावस्था में हैं, इनके आज दस की तपस्या है।

मुनि कुणाल बालक है, फिर भी यह बड़ो के साथ हो गया है। आज नौ की तपस्या है। तपस्या का अपना तेज होता है। गुरुकुलवास में पूरा सिंघाड़ा तपस्या करे, ऐसे अवसर प्रायः कम ही आते होंगे। यह एक विशेष बात है।

९ सितम्बर। आज प्रातः सूर्योदय के पश्चात् मुनि जिनेशकुमारजी आदि तीनों संत आचार्यप्रवर के सान्निध्य में पहुंचे। आज उनके नौ की तपस्या का पारणा था। मुनिवृन्द ने विभिन्न गीतों के साथ उनके तप की अनुमोदना की। इस अवसर पर महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'चतुर्मास का समय है। तपस्या का

रंग खिल रहा है। 'कल्पतरु' में तपस्या के फल लग रहे हैं। संतों में तपस्या हो रही है। तपस्या स्वयं की आत्मा की उज्ज्वलता के साथ संघ प्रभावना की भी निमित्त बनती है। नई बात यह है कि एक वर्ग के तीनों संतों ने एक साथ तपस्या की है। जैसा कि बताया गया है कि मुम्बई में मुनि रणजीतकुमारजी, मुनि अनिकेतकुमारजी और मुनि कौशलकुमारजी ने भी तपस्या की है। कौशलमुनि ने तो मासखमण तप कर लिया। मुनि जिनेशकुमारजी आदि तीनों मुनियों ने भी एक साथ तपस्या की है, मैं इनके प्रति मंगलकामना करती हूं-

परमानन्द कुणालमुनि, वर अग्रणी जिनेश।
साधा गुरु की सन्निधि में, तपोयोग सुविशेष।
गुरु की करुणा से मिला, सुखकर गुरुकुलवास।
हो तप, जप स्वाध्याय से वर्धमान उल्लास।

हमारे धर्मसंघ में तपोयोग की साधना निरन्तर चलती रहे। तीनों मुनियों ने नौ की तपस्या की है। नौ का अंक अखंड होता है। हमारे धर्मसंघ में तपोयोग अखंड, अक्षय रूप में चलता रहे। धर्मसंघ अध्यात्म के क्षेत्र में खूब विकास करता रहे। मंगलकामना।'

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने फरमाया--'एक सिंघाड़ा नौ की तपस्या करके तपस्वी के रूप में सामने आया है। अच्छा है। आत्मा के लिए तपस्या का भी अपना प्रभाव होता है। मुनि जिनेशजी खूब अच्छा कार्य करते रहें। क्षेत्रों को खूब संभालना, प्रेरणा देना आदि कार्य चलता रहे। यहां (गुरुकुलवास में) भी यथासंभव कार्य करते रहें। मुनि परमानन्दजी भी साधना, वक्तृत्व के क्षेत्र में और अन्य योग्यताओं में विकास करते रहें। मुनि कुणाल बालमुनि है। 'कुणाल' निहाल होता रहे। अध्ययन में, साधना में विकास करता रहे, कल्याणकारी सभी दिशाओं में विकास करता रहे।

मुनि चैतन्यजी के आज ग्यारह की तपस्या है। इनकी भी साधना अच्छे रूप में चलती रहे।' पूज्यप्रवर ने आज पारणा करने वाले तीनों मुनियों को अपने हाथ से ग्रास (भोज्य सामग्री) प्रदान की।

गुरुकुलवासी साधु-साध्वियों के लिए दिशा-निर्देश

आज परमपूज्य आचार्यप्रवर की ओर से गुरुकुलवासी साधु-साध्वियों के लिए 'विसम्बन्ध-५' जारी किए गए। ज्ञातव्य है कि गत कुछ माह से कोविद-१९ के संदर्भ में पूज्यप्रवर द्वारा गुरुकुलवासी साधु-साध्वियों को दिशा-निर्देश की दृष्टि से 'विसम्बन्ध पत्र' जारी किए जा रहे हैं। प्रस्तुत संदर्भ में 'विसम्बन्ध' शब्द सोश्यल डिस्टेंसिंग का प्रतीक माना जा सकता है। साध्वी समाज के लिए जारी 'विसम्बन्ध-५' की भाषा इस प्रकार है-

अर्हम् ९.९.२०२०

गुरुकुलवासी साध्वी समुदाय के लिए
विसम्बन्ध - ५

१. गुरुकुलवास में स्थित साध्वीप्रमुखाजी व्यतिरिक्त साध्वियों को निम्नांकित चार ग्रुप्स में विभाजित किया जा रहा है-

- ए ग्रुप - **मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी**। साध्वी विमलप्रज्ञाजी आदि ठाणा-६, साध्वी शारदाश्रीजी आदि ठाणा-५, साध्वी श्रुतयशाजी आदि ठाणा-५ व साध्वी मुदितयशाजी आदि ठाणा-८ =२५
- बी ग्रुप - **साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा**। साध्वी जिनप्रभाजी आदि ठाणा-५, साध्वी शुभ्रयशाजी आदि ठाणा-६ व साध्वी ऋद्धिप्रभा आदि ठाणा-६ = १८
- सी ग्रुप -साध्वी चन्दनबालाजी आदि ठाणा-६, साध्वी निर्वाणश्रीजी आदि ठाणा-७, साध्वी लब्धिप्रभाजी आदि ठाणा-३ व साध्वी कार्तिकयशा आदि ठाणा-४ = २०
- डी ग्रुप - साध्वी कल्पलताजी आदि ठाणा-७, साध्वी सुषमाकुमारीजी आदि ठाणा-६ व साध्वी सुमतिप्रभा आदि ठाणा-६ = १९

२. किसी भी एक ग्रुप की साध्वियों का अन्य किसी भी ग्रुप की साध्वियों के साथ आहार-पानी का लेन देन यथासंभव नहीं हो सकेगा।

३. किसी भी एक ग्रुप की साध्वियां अन्य किसी भी ग्रुप की साध्वियों के धारे हुए कमरों में यथासंभव नहीं आ, जा सकेंगी।

४. किसी भी एक ग्रुप की साध्वियां अन्य किसी भी ग्रुप की साध्वियों व संतों की गोचरी (घरों, डेरों आदि) में यथासंभव आहार, पानी आदि लाने के लिए नहीं जा सकेंगी। ज्ञातियों के जाना हो तो साध्वीप्रमुखाजी की अनुमति मिलने पर साध्वियों के अन्य ग्रुप्स की गोचरी में जाया जा सकता है।

५. किसी भी एक ग्रुप की साध्वियां अन्य किसी भी ग्रुप की साध्वियों के संघट्टे से भी बचने का यथासंभव प्रयास रखें।

६. किसी भी प्रयोजन से डेरों में जाएं तो डेरों के स्थान में रहने के समय मुख पर मास्क रखना यथासंभव जरुरी है।

७. बाइयां साध्वियों के चरण स्पर्श न करें और साध्वियां भी साध्वियों के चरण स्पर्श न करें-इसका यथासंभव ध्यान रखा जाए।

८. महाश्रमण वाटिका में गोचरी आदि के उद्देश्य से जाने के लिए आज्ञा लेना अपेक्षित नहीं हैं।

९. गोचरी (खाद्य, पेय व दवा) मालूम करने की अपेक्षा नहीं है।

१०.नए निर्देश तक एक ही जगह पर तीनों समय प्रतिदिन गोचरी करने में आपत्ति नहीं।

११.घर असूझता होने पर गोचरी बन्द करना आवश्यक नहीं। घर असूझता होने की कारणभूत चारित्रात्मा प्रायश्चित्त प्रदाता से प्रायश्चित्त ग्रहण करने का प्रयास करे।

१२.'कल्पतरु' के उत्तरी अर्धभाग का उपयोग साध्वियां कर सकती हैं। उसके दक्षिणी भाग का सामान्यतया स्वीकृति प्राप्त साध्वियां ही उपयोग कर सकती हैं। उत्तरी अर्धभाग में यथाविधि सन्तों की सेवा करना व यथाविधि सन्तों से बात करना भी अनिषिद्ध है। दक्षिणी अर्धभाग में स्वीकृति पूर्वक समागत साध्वीजी दक्षिणी अर्धभाग में भी आवश्यकतानुसार संतों से बात कर सकती हैं। 'कल्पतरु' में सोश्यल डिस्टेंसिग व मास्क लगाना विशेष अनापत्ति के सिवाय सामान्यतया आवश्यक है।

१३.विशेष निर्देश के सिवाय साध्वी प्रवास स्थल के भीतर साध्वीप्रमुखाजी व्यतिरिक्त साध्वियां सामान्यतया पुरुषों व बाइयों को सेवा न कराएं।

१४.प्रस्तुत 'विसम्बन्ध-५' में आवश्यकतानुसार परिवर्तन, परिवर्धन और अपनयन यथासंभव किए जा सकेंगे।

१५.'विसम्बन्ध-३' (धारा-१ से ३९) के सिवाय पूर्व में जारी किए गए सभी 'विसम्बन्ध पत्र' निरस्त समझे जाएं। प्रस्तुत 'विसम्बन्ध-५' ९ सितम्बर २०२० के सायं ४ बजे से अनिश्चितकाल के लिए लागू किया जा रहा है।

महाश्रमण वाटिका, शमशाबाद, हैदराबाद **आचार्य महाश्रमण**

गुरुकुलवासी साधुओं के लिए जारी 'विसम्बन्ध-५' की भाषा इस प्रकार है-

अर्हम् ९.९.२०२०

गुरुकुलवासी संतों के लिए
विसम्बन्ध - ५

१. गुरुकुलवास में स्थित संतों में ए बी सी जैसी कोई ग्रुप व्यवस्था नहीं है।

२. संत साध्वियों की गोचरी में गोचरी-पानी के लिए सामान्यतया न जाएं, दवा के लिए जाया जा सकता है।

३. मुनि ऋषभजी के वर्ग में जो गोचरी हो, उसमें अन्य संत सामान्यतया न जाएं। मुनि ऋषभजी का वर्ग अन्य वर्गों के साथ सामान्यतया आहार-पानी का लेनदेन भी न रखे।

४. किसी भी प्रयोजन से डेरों में जाएं तो डेरों के स्थान में रहने के समय मुख पर मास्क रखना यथासंभव जरुरी है। शेष समयों में अनुकूलता व विवेक के अनुसार मास्क का उपयोग करें।

५. प्रवास स्थल परिसर के भीतर गोचरी-पानी आदि के संदर्भ में जाने के लिए आज्ञा लेने की अपेक्षा नहीं है।

६. गोचरी (खाद्य, पेय व दवा) मालूम करने की अपेक्षा नहीं है।

७. नए निर्देश तक एक ही जगह पर तीनों समय प्रतिदिन गोचरी करने में आपत्ति नहीं।

८. घर असूझता होने पर गोचरी बन्द करना आवश्यक नहीं। घर असूझता होने की कारणभूत चारित्रात्मा प्रायश्चित्त प्रदाता से प्रायश्चित्त ग्रहण करने का प्रयास करे।

९. गृहस्थ संतों के चरण स्पर्श न करें और संत भी संतों के चरण स्पर्श न करें-इसका यथासंभव ध्यान रखा जाए।

१०.प्रातःकालीन अर्हत् वन्दना, लेखपत्र उच्चारण, गुरुवन्दना और प्रतिक्रमण तथा सायंकालीन गुरुवन्दना व प्रतिक्रमण-ये उपक्रम बड़े समूह में नहीं हो सकेंगे। ये उपक्रम (आचार्यप्रवर की सन्निधि में रहने वाले संतों के सिवाय) अपने-अपने वर्गों में अग्रणी संतों की देखरेख में सुसम्पादित होने चाहिए। पूर्वरात्रिक अर्हत् वन्दना सामूहिक रूप में यथासंभव हो सकेगी। उस समय सुबह-सायं की आलोयणा भी संत ले सकेंगे। पक्खी का खमतखामणा भी अर्हत् वन्दना के बाद के समय में सामूहिक रूप से हो सकेगा। व्यक्तिगत खमतखामणा आवश्यक नहीं है।

११.महाश्रमण सभागार में सायंकालीन अर्हत् वन्दना के संदर्भ में अर्हत् वन्दना का शब्द होने के लगभग ठीक बाद से यहां से फ्री होने तक प्रत्येक संत यथासंभव मास्क लगाए रखे।

१२.अनगार कक्ष (आचार्यप्रवर का प्रवास कक्ष) में जब हम (आचार्यप्रवर) स्थित हों तब मुख्यमुनि के सिवाय जो भी संत आएं व रहें, वे यथासंभव मास्क लगाए रखें।

१३.नए निर्देश तक हमारे लिए आहार-पानी आदि लाना, उपकरणों का प्रतिलेखन करना, वस्त्र प्रक्षालन करना तथा चौकी के सिवाय समुच्चय के कार्य करना सामान्यतया मुनि ऋषभकुमारजी के वर्ग के संतों का ही जिम्मा रहे।

१४.महाश्रमण सभागार के उत्तरी अर्धभाग में यथाविधि गृहस्थों को सेवा कराने में आपत्ति नहीं। ज्ञाती बाइयों को सेवा कराना हो तो आज्ञा लेना अपेक्षित है, अन्य बाइयों को तो सामान्यतया सेवा करानी ही नहीं है। दक्षिणी अर्धभाग में गृहस्थों को सेवा न कराएं, न ही ऊपर गृहस्थों को सेवा कराएं। महाश्रमण सभागार के दक्षिणी अर्धभाग, नीचे वाले कमरों व ऊपरी मंजिल में वैरागी, कर्मचारी व चिकित्सकों के सिवाय सामान्यतया गृहस्थों से बातचीत भी न करें। उन्हें यह बताया जा सकता है कि यहां बातचीत करना नहीं चाहते और बातचीत करने की इच्छा हो तो पुरुषों को महाश्रमण सभागार के उत्तरी अर्धभाग में बातचीत करने के लिए कहा जा सकता है।

१५.महाश्रमण सभागार के उत्तरी अर्धभाग में साध्वियों को सेवा कराने में आपत्ति नहीं।

१६.किसी भी संत को बुखार, खांसी, सर्दी-जुकाम आदि कुछ हो तो विशेष अपेक्षा के सिवाय यथासंभव अपने-अपने कमरों में ही रहना चाहिए।

१७.प्रस्तुत 'विसम्बन्ध-५' में आवश्यकतानुसार परिवर्तन, परिवर्धन और अपनयन यथासंभव किए जा सकेंगे।

१८.'विसम्बन्ध-३' (धारा-१ से ३६) के सिवाय पूर्व में जारी किए गए सभी 'विसम्बन्ध पत्र' निरस्त समझे जाएं। प्रस्तुत 'विसम्बन्ध-५' ६ सितम्बर २०२० के सायं ६ बजे से अनिश्चितकाल के लिए लागू किया जा रहा है।

महाश्रमण वाटिका, शमशाबाद, हैदराबाद **आचार्य महाश्रमण**

आज रात्रि में अर्हत् वन्दना के उपरान्त मुख्य मुनिश्री ने पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार मुनिवृन्द के लिए जारी विसम्बन्ध-५ को पढकर सुनाया।

११ सितम्बर। आज अपराह्न में जैन सेवा संघ हैदराबाद के लोग कुछ बड़ी संख्या में पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। समागंतुक लोगों ने पूज्यप्रवर के समक्ष अपनी भावाभिव्यक्ति दी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल प्रेरणा प्रदान की।

१३ सितम्बर। आज रविवार था। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत परमाराध्य आचार्यप्रवर के ठाणं आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् रविवारीय उपक्रम रहा। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का प्रेरक उद्बोधन हुआ। परमाराध्य आचार्यप्रवर का 'पुरुषार्थ का पथ : भाग्य का रथ' विषय पर विशेष प्रवचन हुआ।

पूज्य सन्निधि में मुनिवृन्द के लिए प्रेरक और रोचक कक्षा का प्रारंभ

१४ सितम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में आज रात्रि अर्हत् वन्दना के उपरान्त मुनिवृन्द के लिए एक कक्षा का प्रारंभ हुआ। इस कक्षा के अन्तर्गत आचार्यप्रवर ने संतों को 'कर्तव्यषट्त्रिंशिका' का शिक्षण प्रदान करना शुरु किया। आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त प्रशिक्षण मुनिवृन्द के लिए अत्यन्त रोचक और प्रेरक सिद्ध हो रहा है।

१७ सितम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने ठाणं आगमाधारित प्रवचन के अन्तर्गत सात निह्नवों पर प्रवचन प्रारंभ किया।

१८ सितम्बर। आज सूर्योदय के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वीवृन्द आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में उपस्थित हुईं। उनके द्वारा सविधि वन्दना और पाक्षिक खमतखामणा किए जाने के उपरान्त पूज्यप्रवर ने दसवेआलियं के एक श्लोक 'जरा जाव न पीलेइ ...' के आधार पर कुछ समय तक पावन प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने सेवा केन्द्र में सेवा प्रदान कर संघीय ऋण से भी यथासमय मुक्त होने हेतु उत्प्रेरित किया।

पूज्यप्रवर की यह प्रेरणा न केवल साध्वियों के लिए, अपितु मुनिवृन्द के लिए भी पथदर्शक थी।

तेरापंथ किशोर मंडल का अधिवेशन

१६ सितम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत ठाणं आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में आज से प्रारंभ हुए किशोर मंडल के अधिवेशन के संदर्भ में कहा--'अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद युवकों की संस्था है। किशोर भी साथ में संबद्ध हैं। किशोर मंडल मानों एक नई पौध का समूह है। कैशोर्य ज्ञान आदि के क्षेत्र में विकास करने का समय होता है। किशोरावस्था में ज्ञान का अच्छा विकास हो जाए और अच्छे संस्कार आ पाएं, यह काम्य है। श्रुत और शील दोनों का विकास हो तो किशोर पीढ़ी और अच्छी बन सकती है। किशोर पीढ़ी अच्छी है तो फिर आगे युवापीढ़ी भी अच्छी हो सकती है। किशोरावस्था में ज्ञान का अर्जन निष्ठा और ईमानदारी से करना चाहिए। स्वयं को यह महसूस हो कि मैंने अच्छी निष्ठा से ज्ञान अर्जित किया है।

किशोर मंडल को तेरापंथ युवक परिषद का संरक्षण प्राप्त है। अन्य ज्ञान के साथ किशोरों में तत्त्वज्ञान का भी विकास हो। जैसे-पच्चीस बोल आदि। थोड़ा और आगे बढ़ें तो तत्त्वज्ञान से संबंधित कुछ गीतिकाएं हैं। मैं किशोरों के लिए एक बात कह रहा हूं कि 'झीणी चरचा' ग्रन्थ की दो गीतिकाओं को कंठस्थ करने का प्रयास हो। एक गीतिका है-'चरचा धारो रे।' (पूज्यप्रवर ने इस गीतिका का आंशिक संगान किया) श्रीमज्जयाचार्य द्वारा रचित यह तत्त्वज्ञान से भरी हुई लम्बी गीतिका है। इस गीतिका को जो किशोर याद कर सकें, उन्हें वैसा प्रयास

करना चाहिए। दूसरी गीतिका है-'शिवबट जातां चोरटा रे, शंख कंख ए दोय जी।' (पूज्यप्रवर ने इस गीतिका का भी आंशिक संगान किया) ये दोनों गीतिकाएं कुछ गहरे तत्त्वज्ञान से जुड़ी हुई हैं। किशोर इन्हें याद कर सकते हैं और कभी संतों से इसका अर्थ भी समझ सकते हैं। इन दो गीतिकाओं के माध्यम से कुछ गहरे तत्त्वज्ञान की बात किशोर मंडल के पास आ सकती है। विद्यालयी ज्ञान का महत्त्व है। उसके साथ तत्त्वज्ञान के विकास का भी प्रयास रहे। किशोरों में ईमानदारी, नशामुक्ति जैसे सत्संस्कार रहें तो इनका जीवन बहुत अच्छा हो सकता है।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के सामने यह किशोर पीढ़ी है। इस पीढ़ी का और अच्छा विकास हो, इस दिशा में प्रयास काम्य है। यह आशा रखें कि आज जो किशोर हैं, वे कभी अच्छे युवक हो सकते हैं और इन्हीं में से कोई आगे अध्यक्षीय दायित्व संभालने वाला बन सकता है। किशोर मंडल का खूब आध्यात्मिक-धार्मिक विकास होता रहे। मंगलकामना।'

कार्यक्रम में तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद के अध्यक्ष श्री राहुल श्यामसुखा, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री संदीप कोठारी तथा किशोर मंडल के संयोजक श्री अर्पित नाहर ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र भंडारी ने अपने विचार व्यक्त किए।

२० सितम्बर। आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान पूज्यप्रवर के ठाणं आगमाधारित पावन प्रवचन के पश्चात् महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का उद्बोधन हुआ। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने रविवार के संदर्भ में 'पारिवारिक शांति के सूत्र' विषय पर भी विशेष प्रवचन किया।

आज रविवार होने के कारण रात्रिकालीन अर्हत् वन्दना के उपरान्त पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में प्रतिदिन आयोजित होने वाली कक्षा का अवकाश रखा गया और भविष्य में भी रविवारीय अवकाश का निर्णय किया गया।

मुनि दीक्षा की घोषणा

२१ सितम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने आज मुमुक्षु अर्हम् रुणवाल (कोल्हापुर) और उसके परिजनों की प्रार्थना पर उसे आगामी २८ नवम्बर २०२० को हैदराबाद में मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की। ज्ञातव्य है कि मुमुक्षु अर्हम् सहित चार मुमुक्षु भाई-बहनों की दीक्षा तथा एक समणी की श्रेणी आरोहण पूर्व में २८ अगस्त के लिए घोषित थे, किन्तु कोरोना वायरस के कारण वह कार्यक्रम समायोजित नहीं हो पाया था।

महीनों की प्यास बुझाने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पहुंचे श्रद्धालु

२३ सितम्बर। आज से करीब १०० श्रावक-श्राविकाओं को मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान महाश्रमण सभागार में उपस्थित रहने की स्वीकृति प्रदान की गई। ज्ञातव्य है कि गत २१ सितम्बर से सरकार द्वारा धार्मिक उपक्रमों में १०० लोगों के एकत्रित हो सकने की स्वीकृति प्रदान की गई। उसी के मद्देनजर सोश्यल डिस्टेंसिंग आदि व्यवस्थाओं का अनुपालन करते हुए यह व्यवस्था बनाई गई। लम्बे अर्से के बाद पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में साक्षात रूप में इस प्रकार जनता की उपस्थिति हुई। हालांकि प्रायः चतुर्मास के दौरान होने वाली जनता की विराट उपस्थिति के सामने यह संख्या बहुत कम थी, किन्तु उपस्थित श्रद्धालुजनों के उत्फुल्ल चेहरे यह स्पष्ट दर्शा रहे थे कि मानों उनकी महीनों की प्यास आज बुझनी प्रारंभ हुई है।

आज पूज्यप्रवर का सातवें निह्नव 'गोष्ठामाहिल' पर पावन प्रवचन हुआ। इस प्रकार प्रतिदिन एक-एक निह्नव के प्रसंग को क्रमशः एक-एक दिन पूज्यप्रवर के मुखारविन्द से सुनने का संभवतः सबके लिए यह प्रथम अवसर ही था।

वयोवृद्धों पर महरबान कृपानिधान

२५ सितम्बर। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पधारे। उसी समय साध्वी चन्दनबालाजी कल्पतरु के 'महाश्रमण सभागार' में प्रविष्ट हुई। वयोवृद्ध होने के कारण उनके साथ एक साध्वी

उन्हें सहारा दिए हुए थी, किन्तु वे साध्वीजी उनके लिए कुर्सी लाने के लिए कुछ कदम दूर चली गई, जब वे कुर्सी लेकर आईं, तब साध्वी चन्दनबालाजी उस पर बैठ भी गईं। आचार्यप्रवर ने यह देखा तो उन पर अनुग्रह बरसाते हुए बालमुनि ऋषिकुमारजी को सम्मुख आने का संकेत दिया। बालमुनि पहुंचे तो पूज्यप्रवर ने उन्हें साध्वी चन्दनबालाजी की ओर संकेत कर पूछा--'इनका नाम क्या है?' बालमुनि ने निवेदन किया--'साध्वी चन्दनबालाजी' आचार्यप्रवर ने बालमुनि को निर्देश प्रदान किया--'साध्वी चन्दनबालाजी के लिए ९.३० बजे से पहले-पहले कुर्सी लगा दिया करो। यह तुम्हारी ओर से इनकी भक्ति हो सकेगी।' बालमुनि ने पूज्यप्रवर के निर्देश को सविनय स्वीकार किया। आचार्यप्रवर का अभिप्राय संभवतः यही था कि सहारा देने वाली साध्वीजी को कुर्सी के कारण वयोवृद्ध साध्वीजी को कुछ क्षण के लिए भी छोड़कर जाना न पड़े। साध्वी चन्दनबालाजी पूज्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात होकर भावविभोर हो उठीं। वयोवृद्ध साधु-साध्वियों के प्रति पूज्यप्रवर का विशेष रुझान देखकर उपस्थित जनता भी अभिभूत थी, जनता द्वारा की जाने वाली 'ऊँ अर्हम्' की हर्ष ध्वनि इसकी साक्ष्य थी।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारंभ

२६ सितम्बर। आज से अणुव्रत अनुशास्ता परमाराध्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारंभ हुआ। इस सप्ताह का प्रथम दिन साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस के रूप में आयोजित हुआ। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् स्थानीय महिलाओं द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया। अणुव्रत समिति-हैदराबाद के मंत्री श्री प्रकाश भंडारी तथा चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र भंडारी ने अपनी-अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में अणुव्रत और साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस के संदर्भ में पावन प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर के रोचक व प्रेरक संस्मरणों को सुनकर मंत्रमुग्ध हुए मुनिवृन्द

आज रात्रि में अर्हत वन्दना के उपरान्त पूज्य सन्निधि में प्रतिदिन चलने वाली 'कर्तव्यषट्त्रिंशिका' की कक्षा करीब एक घंटा तक चली। इस कक्षा में शिक्षण के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने जीवन के परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी से संबंधित संस्मरण सुनाए। आचार्यप्रवर द्वारा फरमाए जा रहे संस्मरण इतने रोचक थे कि संत उस कक्षा को छोड़ना ही नहीं चाह रहे थे। वे किसी न किसी रूप में कक्षा को अधिक समय तक जारी रखने का प्रयास कर रहे थे।

पूज्यप्रवर ने वि.सं. २०४१ में संघीय दृष्टि से अपने विकास के संस्मरणों के अन्तर्गत कुछ बातें इस प्रकार फरमाईं--'जैन विश्व भारती लाडनूं में भिक्षु विहार में ऊपर वाले कमरे (जहां गोल व बड़ा दो कमरे) में गुरुदेव ने मुझको पंचमी की पात्री वहन करने का सेवा कार्य सौंपा था। मेरे से पहले गुरुदेव की सेवा का वह कार्य मुनिश्री मधुकरजी स्वामी करते थे।

फिर लाडनूं से जोधपुर की ओर विहार हुआ। मार्ग में एक गांव में युवाचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने मुनि बालचंदजी (गंगाशहर) को कहा--'मुदितजी (मैं) का रात्रि में सोने का स्थान गुरुदेव के पास निर्धारित होना चाहिए।'

गुरुदेव जोधपुर में महामंदिर उपनगर में पधारे। वहां गुरुदेव ने मुझको गुरुदेव के व्याख्यान से पूर्व सुबह का उपदेश देने का दायित्व सौंपा। वहां से पूरे जोधपुर चतुर्मास में उपदेश मेरा होता था। जोधपुर चतुर्मास के बाद तक भी उपदेश मेरा हुआ।

फिर गुरुदेव बालोतरा पधारे। वहां एक रात मुझे गुरुदेव के पास बुलाया गया। मैं गुरुदेव के दरबार में पहुंचा, युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ भी वहीं थे। गुरुदेव ने मुझे फरमाया--हम जब भी बुलाएं कॉपी, पेन्सिल साथ में लेकर आया करो। तब से गुरुदेव के पास होने वाली मीटिंग आदि की नोटिंग करना मेरे जिम्मे आ गया।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

फिर गुरुदेव मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में जसोल पधारे। वहां पर पारस भवन में प्रवास हो रहा था। एक दिन मध्याह्न में पारस भवन के एक कमरे में मैं गुरुदेव की सेवा में था, तब गुरुदेव ने फरमाया--'लिखो।' गुरुदेव मुझे सिंघाड़ों के चतुर्मास लिखाते गए। ऐसे कुछ चतुर्मास क्षेत्र मैंने लिखे। ज्ञातव्य है मर्यादा महोत्सव सामने था। उस समय मैं तेईसवें वर्ष में था। चतुर्मास जैसा गोपनीय कार्य थोड़ा-सा मेरे से लिखाया। यह मेरे लिए अतिविशिष्ट बात थी।

जसोल मर्यादा महोत्सव पर जो मर्यादा महोत्सव का गीत गुरुदेव की ओर से गाया जाने वाला था। उसका निर्माण करने के लिए एक दिन गुरुदेव ने मुझे फरमाया। मैंने संभवतः वह गीत बनाया और गुरुदेव को संभवतः मालूम कर दिया। हालांकि उस गीत में काफी परिवर्तन कर दिया गया था। परन्तु 'काढे गली गिंवार महाजन जय गुरुआणा ओटी' संभवतः मेरे द्वारा बनाए गए गीत में यह बात थी। उसको संभवतः रख दिया गया और आज भी वह बात जसोल मर्यादा महोत्सव वाले गीत में है।

संभवतः मारवाड़ की किसी क्षेत्र में गुरुदेव ने युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ को फरमाया--'अब आचारांग भाष्य में मुदितजी को जोड़ लो। इसकी संस्कृत (भाषा) ठीक है।' संभवतः उसके बाद मैं आचारांग भाष्य के श्रुतलेखन से जुड़ गया। श्रद्धेय युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी फरमाते और मैं लिखता रहता।' (इन संस्मरणों में यत्किंचित भाव-भाषा का अन्तर रहा हो तो हो सकता है।)

इस प्रकार पूज्यप्रवर ने अपने जीवन के कई प्रसंग फरमाए। इन प्रसंगों को फरमाते समय पूज्यप्रवर की भावभंगिमा पर अपने गुरुद्वय के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और विनय का भाव स्पष्ट झलक रहा था। मुनिवृन्द मानों मंत्र मुग्ध होकर पूज्यप्रवर के मुखारविन्द से विभिन्न संस्मरणों को सुन रहे थे। इन दिनों कक्षा के दौरान यदा-कदा पूज्यप्रवर के जीवन के प्रेरक प्रसंग भी मुनिवृन्द को सुनने को मिल जाते हैं।

२७ सितम्बर। परमाराध्य अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में आयोजित अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का दूसरा दिन। जीवन-विज्ञान दिवस का आयोजन। पूज्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन के पश्चात् जीवन-विज्ञान दिवस के संदर्भ में पावन प्रेरणा प्रदान की।

२८ सितम्बर। अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का तीसरा दिन। अणुव्रत प्रेरणा दिवस का आयोजन। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् निर्धारित विषय पर भी पावन उद्‌बोधन प्रदान किया।

२९ सितम्बर। अणुव्रत अनुशास्ता परमपूज्य आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में आयोजित अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का चौथा दिन पर्यावरण दिवस के रूप में समायोजित हुआ। पूज्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् आज के दिवस के संदर्भ में भी पावन सम्बोध प्रदान किया।

साध्वी दीक्षा की घोषणा

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज मुमुक्षु मधुमिता आंचलिया (गंगाशहर-बोलपुर) को २८ नवम्बर २०२० को आयोज्य दीक्षा समारोह में साध्वी दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की। ज्ञातव्य है कि पहले इस मुमुक्षु बहन की दीक्षा २८ अगस्त २०२० को होने वाली थी, किन्तु कोरोना वायरस के कारण वह आयोजन नहीं हो सका।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक-संजय खटेड़ द्वारा प्रिंट मास्टर इन्टरप्राइजेज, एल.एल.पी., ६३, जी.एफ., पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला